Chapter- 6

रामायण और महाभारत के पात्र

STUDY NOTES

MIND MAP

पाठ प्रवेश

लेखक ने श्रवण कुमार के चरित्र को बड़ी कुशलतापूर्वक चित्रित किया है। मातृ-पितृभक्त श्रवण कुमार एक आदर्श मातृ-पितृभक्त पुत्र है। वह हमेशा अपने माता-पिता की सेवा करता है। प्न देखते समय, श्रवण कुमार को तीर से मरते देखकर, अभिशाप सर्ग में दशरथ का पश्चाताप एवं दु:ख प्रकट हुआ है। ... मानव के आदर्शों एवं प्राचीन स्वरूप के गौरव का दर्शन कराना ही इस कहानी का मूल उद्देश्य है। कर्ण (साहित्य-काल) महाभारत (महाकाव्य) के सबसे प्रमुख पात्रों में से एक है। कर्ण का जीवन अंतत विचार जनक है। कर्ण महाभारत के सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारियों में से एक थे। कर्ण छ: पांडवों में सबसे बड़े भाई थे । भगवान परशुराम ने स्वयं कर्ण की श्रेष्ठता को स्वीकार किया था । कर्ण की वास्तविक माँ कुन्ती थीं और कर्ण और उनके छ: भाइयों के धर्मपिता महाराज पांडु थे। कर्ण के वास्तविक पिता भगवान सूर्य थे। कर्ण को एक आदर्श दानवीर माना जाता है क्योंकि कर्ण ने कभी भी किसी माँगने वाले को दान में कुछ भी देने से कभी भी मना नहीं किया भले ही इसके परिणामस्वरूप उसके अपने ही प्राण संकट में क्यों न पड़ गए हों। इसी से जुड़ा एक वाक्या महाभारत में है जब अर्जुन के पिता भगवान इन्द्र ने कर्ण से उसके कुंडल और दिव्य कवच माँगे और कर्ण ने दे दिए।

पाठ सार

माता पिता की सेवा से बढ़कर संसार में कुछ नहीं है। जिसने माता-पिता की सेवा कर ली उसने संसार में सब कुछ प लिया। श्रवण कुमार का नाम मातृ-पितृ भक्ति के लिए सदा ही सम्मान से लिया जाता है। इसी प्रकार महाभारत के महापात्र कर्ण को अपनी दानशीलता तथा मित्र भक्ति के लिए जाना जाता है।

श्रवण कुमार का नाम रामायण के महापात्र के अनुसार उसकी मातृ-पितृ भक्ति के मिसाल के रूप में लिया जाता है। श्रवण का वैवाहिक जीवन सफल नहीं रहा। उसने अपने अंधे माता पिता की सेवा की। माता-पिता को एक काँवर में बिठाकर तीर्थयात्रा करवाई इसी यात्रा के समय विश्राम करते हुए माता पिता की प्यास बुझाने के लिए जब श्रवण नदी पर पानी लाने गया तब शिकार में आए राजा दशरथ के शब्दभेदी तीर से मारा जाता है। श्रवण मृत्यु से पहले अपनी सारी कहानी राजा दशरथ को बता दी थी। श्रवण के माता-पिता जल ग्रहण करने से मना कर देते हैं और उन्हें पुत्र शोक से संतप्त होने का अभिश्राप देते हैं। राजा दशरथ को अपने किए पर पछतावा हो रह था पर होनी को कोई टाल नहीं सकता था।

महाभारत के महापात्र के रूप में एक और मिसाल कर्ण जो कि अपनी दानशीलता और मित्र भक्ति के लिए जाना जाता है। महाभारत के युद्ध में जब अर्जुन ने कर्ण को घायल कर दिया तब अर्जुन के मन में अंहकार जाग उठा तब श्रीकृष्ण ने कर्ण के कवच कुंडल दान की बात बताई और श्रीकृष्ण के कहे अनुसार दोनों वेश बदलकर ब्राम्हण वेश में रणभूमि में पहुँचे। वहाँ घायल कर्ण से जब श्रीकृण ने भीक्षा माँगी तब कर्ण ने पास पड़े पत्थर से अपने सोने के दाँत तोड़कर, गंगा माँ का स्मरण कर उसे धोकर ताकि जुठा न रहे ब्राम्हणों को दान में दे दिया। दोनों अपने अपने असली रूप में आ गए. अपने अपने और श्रीकृष्ण ने उसे तीनों लोकों में दानवीर कहलाओगे का आशीर्वाद दिया। कर्ण की छवि आज भी भारतीय

जनमानस में एक ऐसे महायोद्धा की है जो जीवनभर प्रतिकूल परिस्थितियों से लड़ता रहा। बहुत से लोगों का यह भी मानना है कि कर्ण को कभी भी वह सब नहीं मिला जिसका वह वास्तविक रूप से अधिकारी था। कर्ण युधिष्ठिर और दुर्योधन से ज्येष्ठ था, कर्ण को एक दानवीर और महान योद्धा माना जाता है। उन्हें दानवीर और मृत्युंजय कर्ण भी कहा जाता है।इस प्रकार रामायण और महाभारत के पात्र सिर्फ पात्र नहीं, वे हमारे आदर्श भी हैं।

****

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow